ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 189-190**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

किशोरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पाश्चात्य संस्कृति के संदर्भ में

डॉ0 भाग्यवंती चौहान
सहायक प्रोफेसर–गृह विज्ञान विभाग, किसान पी० जी० कॉलेज, रक्सा, रतसर, बलिया (उ०प्र०), भारत

Received-12.09.2024, Revised-20.09.2024, Accepted-26.09.2024 **E-mail : drbhagyawantichauhan@gmail.com**

सारांशः पाश्चात्य संस्कृति के विपरीत भारतीय संस्कृति में विवाह के लिए लड़कियों की आयु सीमा 18 साल और लड़कों के लिए 21 साल का निर्धारण किया गया है। भारतीय संस्कृति विश्व की अनूठी संस्कृति है और अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति के इन्हीं गुणों के कारण भारत को विश्व गुरू की उपाधि मिली हुई है। भारत में बालक की प्रथम पाठशाला उसका घर और प्रथम अध्यापिका उसकी मां को माना जाता है। बालक चार से पांच साल तक अपनी मां के सानिध्य में रहकर ही संस्कृति और सभ्यता आदि को ज्ञान प्राप्त करता है। उसका पश्चात वह स्कूल में जाता है और वहां औपचारिक रूप से नैतिक शिक्षा, धर्म और संस्कृति आदि के साथ अक्षर ज्ञान आदि प्राप्त करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किशोरावस्था तक माता पिता व शिक्षक बालक को अनेक प्रकार से विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं। साथ ही उसे देश की परम्परा आदि से भी परिचित कराने का काम करते हैं।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति, अनूठी संस्कृति, सानिध्य, अक्षर ज्ञान

किशोरों पर पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों के अध्ययन में किशोरों की सामाजिक आर्थिक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि उसके सोचने विचारने एवं विभिन्न प्रकार क्रियाकलापों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्ति का दृष्टिकोण उसके उस पृष्ठभूमि का प्रतिफल है। जिस पृष्ठभूमि से वह किसी न किसी रूप से सम्बन्धि ात है और उसके क्रिया कलापों को प्रभावित करता है। किसी भी अध्ययन में सूचनादाताओं की आयु, शिक्षा, व्यवसाय, परिवार का स्वरूप, जाति तथा मासिक आय से सम्बन्धित आकड़ों का विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण को उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित कुछ तत्व और किशोरों की स्थिति कहां तक किशोरों पर पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों को दर्शाता है। किशोरावस्था संक्रमण काल है। जब एक व्यक्ति बच्चे से वयस्क बनने में शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से रूपांतरित होता है। यह ऐसा समय है जिसमें नई सामाजिक भूमिकाओं के लिए शारीरिक और मानसिक परिवर्तन की मांग होती है। इन परिवर्तनों के कारण किशोरों की भ्रान्तियों और दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था में बालक निर्भरता से स्वायत्ता की तरफ कदम बढ़ाता है। इस समय शारीरिक और सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण सामंजस्य की आवश्यकता होती है। इस अवस्था में किशोरों के सामाजीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होती है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार, जब बालक 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है तब उसके प्रति दूसरों और दूसरों के प्रति उसके दृष्टिकोण न केवल उसके अनुभवों में वरन सामाजिक सम्बंधों में भी परिवर्तन करने लगते हैं।

इस परिवर्तन के कारण उसके सामाजिक विकास का स्वरूप अग्रांकित होता है–

बालकों एवं बालिकाओं में एक दूसरे के प्रति बहुत आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। अतः वे अपनी सर्वोत्तम वेश भूषा, बनाव श्रृंगार और सजधज कर एक दूसरे के सामने अपने आप को उपस्थित करते है।

बालक और बालिकाएं दोनों अपने अपने समूहों का निर्माण करते हैं। इन समूहों का मुख्य बालक और इसका उद्देश्य मनोरंजन होता है। जैसे– पर्यटन, पिकनिक, नृत्य, संगीत आदि।

कुछ बालक और बालिकाएं किसी भी समूह के सदस्य नहीं बनते हैं। वे उनसे अलग रहकर उनसे या विभिन्न लिंग के व्यक्तियों से घनिष्ठता स्थापित करते हैं और उन्हीं के साथ अपना समय व्यतीत करते हैं।

बालकों में अपने समूह के प्रति अत्यधि एक भक्ति होती है। वे उसके द्वारा स्वीकृत वेशभूषा, आचार विचार, व्यवहार आदि को अपना आदर्श बनाते हैं।

समूह की सदस्यता के कारण उनमें नेतृत्व, उत्साह, सहानुभूति, सद्भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है। साथ ही उनकी आदतों रूचियों और जीवन दर्शन का निर्माण होता है।

इस अवस्था में बालकों और बालिकाओं का अपने माता पिता से किसी न किसी बात पर संघर्ष या मतभेद हो जाता है। यदि माता पिता अपनी स्वतंत्रता का दमन करके उनके जीवन को अपने आदर्शों के सांचें में ढालने की कोशिश करते हैं या उनके समक्ष नैतिक आदर्श प्रस्तुत करके उनका अनुकरण किये जाने पर बल देते हैं तो नये खून में विद्रोह की भावना चीत्कार कर उठती है।

किशोर बालक अपने भावी व्यवसाय का चुनाव करने के लिए सदैव चिंतित रहता है। इस कार्य में उसकी सफलता या विफलता उसके सामाजिक विकास को निश्चित रूप से प्रभावित करती है।

किशोर बालक या बालिकाएं सदैव किसी न किसी चिंता या समस्या में उलझे रहते हैं। जैसे– पैसा, प्रेम, विवाह, कक्षा में प्रगति, पारिवारिक जीवन आदि। ये समस्याएं उनके सामाजिक विकास की गति को तीव्र या मंद, उचित या अनुचित दिशा प्रदान करती है।

यह अवधि किशोरों के लिए सामाजिक विकास और समायोजन की अवधि है। इस अवधि में सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक विकास साथियों के समूह प्रभाव में वृद्धि होना है। इस अवस्था में बालक के व्यवहार को आकार देने में साथी समूह के प्रकार का विशेष योगदान होता है। उनकी रूचियों, नजरियों और मूल्यों पर भी साथियों का प्रभाव पड़ता है। इस समयावधि में लड़के और लड़कियां समाज में अपने स्थान और स्थिति को लेकर सचेत हो जाते हैं और धीरे धीरे सामाजिक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

गतिविधियों और समाज में अपने क्षेत्र में विस्तार करने की कोशिश करने लगते हैं। किशोरों के मस्तिष्क विकास की प्रवृत्ति होती है कि वे नये अनुभवों की तलाश करते हैं और अधिक जोखिमपूर्ण कार्य करना चाहते हैं।

बालक में इस अवधि में नैतिक मूल्यों और नैतिकता का विकास होता है। और वह सही तथा गलत का निर्णय अपने तर्क के आधार पर करता है।

इनमें आत्मसम्मान की भावना प्रबल होती है। वर्तमान समय में किशोर सामाजीकरण में संवाद के विभिन्न तरीकों जैसे– इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया आदि को सीखता है। जो बालक के समाजीकरण को एक नया आयाम प्रदान करता है।

स्किनर व हैरीमैन के शब्दों में– 'वातावरण और संगठित साधनों में कुछ ऐसे विशेष कारक हैं जिनका बालक के सामाजिक विकास की दशा पर निश्चित और विशिष्ट प्रभाव पड़ता है।'

उल्लिखित कारकों में से अधिक महत्वपूर्ण अधोलिखित है– वशांनुक्रम – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बालक के सामाजिक विकास पर वंशानुक्रम का कुछ सीमा तक प्रभाव पड़ता है। इसकी पुष्टि में क्रो और क्रो ने लिखा है– शिशु की पहली मुस्कान या उनका कोई विशिष्ट व्यवहार वंशानुक्रम से उत्पन्न होने वाला हो सकता है।

शारीरिक मानसिक विकास– स्वस्थ व अधिक विकसित मस्तिष्क वाले बालक का सामाजिक विकास अस्वस्थ और कम विकसित मस्तिष्क वाले बालक की अपेक्षा अधिक होता है।

संवेगात्मक विकास– बालक के सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार उसका संवेगात्मक विकास है। क्रोध व ईर्ष्या करने वाला बालक दूसरे की घृणा का पात्र बन जाता है। इसके विपरीत प्रेम और विनोद से परिपूर्ण बालक सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। ऐसी स्थिति में दोनों बालकों के सामाजिक विकास में अंतर होना स्वाभाविक है।

परिवार– परिवार ही वह स्थान है जहां सबसे पहले बालक का सामाजीकरण होता है। परिवार के बड़े लोगों का जैसा आचरण और व्यवहार होता है बालक वैसा ही और व्यवहार करने का प्रयत्न करता है।

पालन–पोषण की विधि– माता–पिता द्वारा बालक के पालन पोषण की विधि उसके सामाजिक विकास पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है। सामाजिक व्यवस्था– सामाजिक व्यवस्था बालक के सामाजिक विकास को एक निश्चित रूप और दिशा प्रदान करती है। समाज के कार्य आदर्श और प्रतिमान बालक के दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं।

विद्यालय – बालक के सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से परिवार के बाद विद्यालय का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है।

शिक्षक– बालक के सामाजिक विकास पर शिक्षक का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक शिष्ट, शांत और सहयोगी है, तो उसके छात्र भी उसी के समान व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक क्रोधी, अशिष्ट और असहयोगी है, तो उसके विद्यार्थी भी उसके समान बन जाते हैं।

खेलकूद – बालक के सामाजिक विकास में खेलकूद का विशेष स्थान है। खेल द्वारा ही वह अपनी सामाजिक प्रवृत्तियों और सामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करता है।

समूह या टोली– समूह या टोली के सदस्य के रूप में बालक इतना व्यवहार कुशल हो जाता है कि समाज में प्रवेश करने के बाद उसे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता है।

अन्य कारक – बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं– संस्कृति, कैम्प–जीवन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि ।

किशोरों से समाज की कौन सी अपेक्षाएं अच्छी हैं और कौन सी बुरी, इसे भी महत्व देने की आवश्यकता है। समाज की कौन सी अपेक्षाएं पूर्ति के योग्य है और कौन सी अपेक्षाए उपेक्षा के योग्य ये भी विचारणीय है। इसे किशोरों पर थोपा नहीं जा सकता है। किशोरों की दृष्टि से ये एक उलझा प्रश्न है कि उसे किस अपेक्षा पर क्या प्रतिक्रिया देनी है। इसी मानसिक स्थिति के कारण भी उसके सही ढंग से समायोजन नहीं हो पाता है। इसलिए इस स्थिति पर भी विचार करने की आवश्यकता है। क्योंकि इसका संबंध किशोरों से है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, आभा, 2014 मानव विज्ञान, प्वाइंटर पब्लिकेशन जयपुर, प्रथम संस्करण ।
2. शेखावत, समता, 2005, किशोरावस्था, शिखा प्रकाशन, इंदौर, द्वितीय संस्करण ।
3. बर्मन, गायत्री, 2005, किशोरावस्था, शिवा प्रकाशन इन्दौर, द्वितीय संस्करण।

*****